हिंदी पाठ 3(हिमालय की बेटियाँ) और पाठ 4(कठपुतली)

(पाठ 3 तथा पाठ 4 के नोट्स)

पाठ 3 हिमालय की बेटियाँ

नोट- पाठ 3 (हिमालय की बेटियाँ) के लिए निर्देश

(1) कॉपी में सबसे पहले 15 कठिन शब्द (एक बार) फिर प्रश्न-उत्तर और फिर पाठ का अभ्यास कार्य लिखें।
(२)अभ्यास -कार्य के प्रश्न नही लिखना है,सीधे उत्तर लिखें।
(3) पाठ का सारांश और शब्दार्थ केवल पढ़ने और समझने के लिए है, इसे कॉपी में नही लिखना है।
(4) पाठ को निम्न - लिखित क्रम में समझें-
(क)सर्वप्रथम पाठ का वाचन(रीडिंग)करें।
(ख)तत्पश्चात पाठ का सारांश और शब्दार्थ पढ़े।
(ग)फिर कठिन शब्द ,प्रश्न-उत्तर तथा अभ्यास कार्य लिखें।

हिमालय की बेटियाँ पाठ का सारांश(SUMMARY)

हिमालय की बेटियाँ नागार्जुन जी द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध निबंध है। लेखक प्रस्तुत निबंध में नदियों के प्रति अपार श्रद्धा व आदर भाव प्रकट करते है।माँ ,दादी ,मौसी और मामी की गोद की तरह लेखक इन नदियों की धारा में डुबकियाँ लगाया करता था। वह आश्चर्य प्रकट करता है कि कैसे दुबली -पतली गंगा ,यमुना ,सतलुज मैदानों में उतरकर विशाल हो जाती हैं। अपने पिता(हिमालय)का विराट प्रेम पाकर भी ,यदि इन नदियों का ह्रदय अतृप्त है ,तो कौन वह होगा ,जो इनकी प्यास मिटा सकेगा। बर्फ से ढकी पहाड़ियाँ ,छोटे छोटे पौधों से भरी घाटियाँ ,बन्धुर अधित्यकाएं ,सर सब्ज उपत्यकायें आदि स्थान इन नदियों के खेलने का घर है।खेलते खेलते ये दूर निकल जाती है ,तो देवदार ,चीड़ ,सरों ,चिनार ,सफेदा ,कैल के जंगलों में पहुंचकर शायद इन्हें बीती बातों को याद करने का मौका मिल जाता होगा। सिन्धु और ब्रह्मपुत्र के बीच रावी ,सतलुज , ,चनाब ,झेलम ,गंगा ,यमुना ,गंडक आदि कई छोटी बड़ी नदियाँ है ,जो हिमालय की ही बेटियां है। हिमालय के पिघले हुए दिल की एक एक बूँद न जाने कब से इकठ्ठा होकर इन दो महानदी के रूप मे समुद्र की ओर प्रवाहित होती रहती हैं। लेखक को ख्याल में आता है कि बूढ़े हिमालय की गोद में बच्चियां बनकर ये नदियाँ कैसे खेल खेला करती हैं। यह दृश्य पहाड़ी लोगों को भले ही आकर्षित न करें ,लेकिन लेखक को हिमालय को ससुर और समुद्र को हिमालय का दामाद कहने में कोई झिझक नहीं होती है। ऐसी परिस्थिति में कालिदास ने अपने काव्य में विरही यक्ष का जो वर्णन किया है ,उसमें मेघदूत से कहा गया है कि बेतवा नदी को प्रेम का प्रतिदान देते जाना ,तुम्हारी प्रेयसी तुम्हे पाकर अवश्य ही प्रसन्न होगी। कालिदास को भी इन नदियों का सचेतन रूपक पसंद था। काका -कालेलकर ने नदियों को लोकमाता कहा है। लेखक इन नदियों को हिमालय की बेटियां कहना अधिक पसंद करता है। बहन का स्थान कितने कवियों ने इन नदियों को दिया है।लेखक का मन जब उचट जाता है तो वह तिब्बत में सतलुज के किनारे जाकर बैठ जाता है। दोपहर के समय में पैर लटकाकर वह पानी में बैठ जाता है।थोड़ी देर में प्रगतिशील जल ने असर कर मन को तरोताजा कर दिया और कवि गीत गुनगुनाने लगता है।

नोट- पाठ का सारांश केवल पढ़ने और समझने के लिए है।इसे कॉपी में नही लिखना है।

कठिन शब्दार्थ

(पृष्ठ : 12)–गंभीर : संजीदा, शांत (serious); **संभ्रांत :** धनी, संपन्न (rich); **प्रतीत होना :** दिखना (to appear); **आदर :** सम्मान (respect); **श्रद्धा :** विश्वास (reliance); **डुबकियाँ लगाना :** नहाना (to take bath); **हैरान :** आश्चर्यचकित (perplexed); **समतल :** बराबर पृष्ठ वाला (plain); **विशाल :** बड़ा (vast)।

(पृष्ठ : 13)–उल्लास : खुशी (happiness); **कौतूहल :** जिज्ञासा (curiosity); **विस्मय**-आश्चर्य (astonishment)। **लक्ष्य :** उद्देश्य (objective, goal); **बेचैन :** परेशान (restless); **विराट :** विशाल (enormous); **अतृप्त :** भूखा (hungry); **जली (जलीय) :** जलयुक्त (aquatic); **अधित्यकाएँ :** पहाड़ी के ऊपर का समतल भाग (level ground situated over a hill); **सरसब्ज :** हरी-भरी (green); **उपत्यका :** तराई, घाटी (valley at the foot of a mountain); **निकेतन :** घर (home); **नटखट :** शरारती (naughty); **बेटियों :** पुत्रियों (daughters); **मौन :** चुप (silent); **प्रवाहित होना :** बहना (to flow); **श्रेय :** सौभाग्य (good fortune); **लुभावना :** आकर्षक (attractive)।

मुहावरा–अपने आप में खोना-अपने विषय में ही सोचना।

(पृष्ठ : 14)–विरही : वियोगी (one who is sad owing to separation from his wife or Beloved); **प्रतिदान :** वापस करना (to return); **सचेतन :** विवेकयुक्त प्राणी (a sentient being); **जुदा-जुदा :** अलग-अलग (separately); **नतीजा :** परिणाम (result); **हर्ज :** नुकसान (loss); **प्रेयसी :** प्रेमिका (a sweet-heart); **रूपक :** रूप से युक्त (a metaphor)।

मुहावरा–सर धुनना-पछताना, पश्चाताप करना।

ममता : स्नेह (affection); **प्रगतिशील :** आगे की ओर बढ़ता हुआ (progressive); **लीला :** रहस्य से भरा कार्य (a wonderful performance); **मुदित :** प्रसन्न (rejoiced); **खुमारी :** सुस्ती (drowsiness); **बलिहारी जाना :** कुर्बान होना (to sacrifice); **नटी :** नाटक की अभिनेत्री (actress); **चित्रित :** चित्र के रूप में अंकित (portrayed); **पट :** परदा (a screen); **अनुपम :** अद्वितीय (unique); **अद्‌भुत :** विचित्र (strange); **छाप :** प्रभाव, असर (impress)।

मुहावरा–मन उचट जाना-लगाव न रह जाना। **तबीयत ढीली होना**-अस्वस्थ महसूस करना।

नोट- पाठ के शब्दार्थ केवल पढ़ने और समझने के लिए है।इसे कॉपी में नही लिखना है।

हिमालय की बेटियां प्रश्न अभ्यास (लेख से)

प्र. १. नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं ?

उत्तर- भारतीय संस्कृति में नदियों को माँ मानने की परंपरा रही है ,लेकिन लेखक इन नदियों को विभिन्न रूपों में देखता है।वह उन्हें बेटी ,प्रेयसी एवं बहन के रूप में भी देखता है।

प्र.२. सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

उत्तर- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र से ही अनेक नदियाँ रावी ,सतलुज ,व्यास ,चनाब ,झेलम ,कुभा ,कपिशा ,गंगा यमुना ,सरयू ,गंडक ,कोसी आदि निकलती है।हिमालय के हिमनदों से पिघलकर एक एक बूँद से यह नदियाँ बनकर समुद्र की ओर प्रवाहित होती है। लेखक के अनुसार समुद्र बहुत सौभाग्यशाली है ,जिन्हें हिमालय की इन बेटियों का हाथ पकड़ने का सौभाग्य मिला है।

प्र.३. काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

उत्तर - जल ही जीवन है। ये नदियाँ हमें जल प्रदान कर जीवनदान देती हैं। ये नदियाँ लोगों के लिए कल्याणी एवं माता के समान पवित्र हैं। इन नदियों के किनारे ही लोगों ने अपनी पहली बस्ती बसाई और खेती बाड़ी करना शुरू किया। इसके अलावा ये नदियाँ गाँवों और शहरों की गंदगी भी अपने साथ बहाकर ले जाती रही हैं। इनका जल भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में विशेष भूमिका निभाता है। मानव के आधुनिकीकरण में जैसे-बिजली बनाना, सिंचाई के नवीन साधनों आदि में इन्होंने पूरा सहयोग दिया है। मनुष्य के लिए ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षी, पेड़-पौधों आदि के लिए भी ये नदियाँ बहुत उपयोगी है। इस प्रकार नदियाँ हम सब के लिए कल्याणकारी हैं। यही कारण है कि काका कालेलकर ने इन्हें लोकमाता कहा है।

प्र.४. हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है?

उत्तर- हिमालय की यात्रा में लेखक ने पर्वतराज हिमालय तथा इसके हिमनदों की , विभिन्न नदियों की , सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों की , हरी -भरी घाटियों की , बादलों तथा समुद्र आदि की प्रशंसा की है ।

पाठ्य पुस्तक का अभ्यास कार्य

प्रश्न 3.

पिछली कक्षा में आप विशेषण और उसके भेदों से परिचय प्राप्त कर चुके हैं। नीचे दिए गए विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) का मिलान कीजिए

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
संभ्रांत	वर्षा	चंचल	जंगल

समतल महिला घना नदियाँ
मूसलाधार आँगन

उत्तर-

विशेषण विशेष्य विशेषण विशेष्य

संभ्रांत महिला चंचल नदियाँ
समतल आँगन घना जंगल
मूसलाधार वर्षा

प्रश्न 4.

द्वंद्व समास के दोनों पद प्रधान होते हैं। इस समास में 'और' शब्द का लोप हो जाता है, जैसे- राजा-रानी द्वंद्व समास है जिसका अर्थ है राजा और रानी। पाठ में कई स्थानों पर द्वंद्व समासों का प्रयोग किया गया है। इन्हें खोजकर वर्णमाला क्रम (शब्दकोश-शैली) में लिखिए।

उत्तर
छोटी – बड़ी
भाव – भंगी
माँ – बाप

प्रश्न 5.

नदी को उलटा लिखने से दीन होता है जिसका अर्थ होता है गरीब। आप भी पाँच ऐसे शब्द लिखिए जिसे उलटा लिखने पर सार्थक शब्द बन जाए। प्रत्येक शब्द के आगे संज्ञा का नाम भी लिखिए, जैसे-नदी-दीन (भाववाचक संज्ञा)।

उत्तर-
रात-तार, जाता-ताजा, भला-लाभ, राही-हीरा, नव-वन, नमी-मीन, नशा-शान, लाल-लला

प्रश्न 6.

समय के साथ भाषा बदलती है, शब्द बदलते हैं और उनके रूप बदलते हैं, जैसे-बेतवा नदी के नाम का दूसरा रूप 'वेत्रवती' है। नीचे दिए गए शब्दों में से ढूँढ़कर इन नामों के अन्य रूप लिखिए । सतलुज, रोपड़, झेलम, चिनाब, अजमेर, बनारस

उत्तर-
सतलुज शतद्रु
रोपड़ रूपपुर
झेलम वितस्ता
चिनाब विपाशा
अजमेर अजयमेरु
बनारस वाराणसी

पाठ 4 कठपुतली(कविता)

नोट- पाठ 4(कठपुतली कविता) के लिए निर्देश

1)कॉपी में सबसे पहले 10 कठिन शब्द(1बार) फिर पाठ की सप्रसंग व्याख्या फिर प्रश्न -उत्तर तथा अंत मे अभ्यास कार्य लिखें।

(२)अभ्यास -कार्य के प्रश्न नही लिखना है, सीधे उत्तर लिखें।

(3) पाठ को निम्न - लिखित क्रम में समझें-

(क)सर्वप्रथम कविता का वाचन(रीडिंग)करें।

(ख)तत्पश्चात शब्दार्थ पढ़े।

(ग)फिर कठिन शब्द ,सप्रसंग -व्याख्या , प्रश्न-उत्तर तथा अभ्यास कार्य लिखें।

कविता की सप्रसंग व्याख्या

1) कठपुतली गुस्से से उबलती बोली
ये धागे क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?
इन्हें तोड़ दो; मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।

संदर्भ - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठय पुस्तक हिन्दी "वसंत भाग दो " के पाठ 4 " कठपुतली "नामक कविता से लिया गया है । इस कविता के कवि "श्री भवानीप्रसाद मिश्र " जी है।

प्रसंग - इस कविता में कठपुतलियाँ स्वतंत्रता की इच्छा से स्वयं अपनी बात व्यक्त (कह) कर रहीं हैं।

व्याख्या - कठपुतली कविता भवानीप्रसाद मिश्र जी द्वारा लिखी गयी एक हृदयस्पर्शी कविता है। प्रस्तुत कविता में हमेशा से दूसरों के ईशारों पर नचाने वाली कठपुतली को भी अपनी पराधीनता के जीवन पर क्रोध आता है। वह कहती है कि मैं धागे पर नाचनेवाली क्यों हूँ। इन धागों को तोड़ देना चाहिए।वह स्वयं आत्मनिर्भर जीवन जीना चाहती है।अतः वह आजाद होना चाहती है और अपनी इच्छानुसार जीना चाहती है।

2) सुनकर बोलीं और-और कठपुतलियाँ
कि हाँ, बहुत दिन हुए हमें अपने मन के छंद छुए।

संदर्भ - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठय पुस्तक हिन्दी "वसंत भाग दो " के पाठ 4 " कठपुतली "नामक कविता से लिया गया है । इस कविता के कवि "श्री भवानीप्रसाद मिश्र " जी है।

प्रसंग - इस कविता में कठपुतलियाँ स्वतंत्रता की इच्छा से स्वयं अपनी बात व्यक्त (कह) कर रहीं हैं।

व्याख्या - उसकी बात सुनकर अन्य कठपुतलियाँ भी पराधीनता के जीवन से मुक्त होना चाहती है।वह कहती है कि बहुत दिन हुए अपनी इच्छानुसार कार्य किये हुए।अतः अब आजादी मिलनी ही चाहिये।

3) मगर.....
पहली कठपुतली सोचने लगी
ये कैसी इच्छा मेरे मन में जगी?

संदर्भ - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठय पुस्तक हिन्दी "वसंत भाग दो " के पाठ 4 " कठपुतली "नामक कविता से लिया गया है । इस कविता के कवि "श्री भवानीप्रसाद मिश्र " जी है।

प्रसंग - इस कविता में कठपुतलियाँ स्वतंत्रता की इच्छा से स्वयं अपनी बात व्यक्त (कह) कर रहीं हैं।

व्याख्या - इस बात पर पहली कठपुतली सोचने लगी कि उसके मन में स्वतंत्रता की चाह कैसे जगी।आजाद रहना सबको प्रिय है ,लेकिन कठपुतलियों का निर्माण ही धागों के सहारों से मालिक के ईशारों पर नाचना है।अत: वह अपना मूलभूत स्वभाव कैसे छोड़ सकती है।इस बात को लेकर वह चिंतातुर हो गयी।पहली कठपुतली पर सबकी स्वतंत्रता की जिम्मेदारी आती है ,तो वह सोचकर समझकर कदम उठाना जरुरी समझती है।

शब्दार्थ

1)कठपुतली - काठ से बनी पुतली जो हमेशा दूसरों के इशारो पर नाचती है।
2)गुस्से से उबलना- क्रोध आना
3)पाँव पर छोड़ दो - आत्मनिर्भर होने दो
4)मन के छंद छूना - मन में खुशी आना

पाठ के प्रश्न -उत्तर

प्र.१. कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर- कठपुतली को उसका मालिक धागों से बांधकर अपने इशारों से नचा रहा था।वह अपनी गुलामी से मुक्त होना चाहती है। उसे रोज रोज मालिक के ईशारों पर नाचना पसंद नहीं है। वह अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती है। यही कारण है कि कठपुतली को अपने जीवन पर गुस्सा आया।

प्र.२. कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

उत्तर -. कठपुतली को मालिक अपने इशारों पर नाचने के लिए बनाता है। वह धागों के सहारे उन्हें जीवन दान देता है। कठपुतली का स्वयं व्यक्तिगत जीवन नहीं है। वह पराधीनता का जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। वह सिर्फ स्वतंत्रता का सपना देख सकती है ,स्वतंत्र नहीं हो सकती है। यही कारण है कि वह अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकती है।

प्र.३. पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?

उत्तर - सभी कठपुतलियाँ साथ मे जीवन यापन करती है। उन्हें स्वयं भी पराधीन रहना पसंद नहीं है। वह अपना स्वछंद (स्वतंत्र)जीवन यापन करना चाहती हैं। यही कारण है कि जब पहली कठपुतली आजाद होने की बात करती है ,तो सभी उसका साथ देने की बात करती हैं।

प्र.४. पहली कठपुतली ने स्वयं कहा कि-'ये धागे/क्यों हैं मेरे पीछे-आगे?/इन्हें तोड़ दो;/मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।'-तो

फिर वह चिंतित क्यों हुई कि-'ये कैसी इच्छा/मेरे मन में जगी?' नीचे दिए वाक्यों की सहायता से अपने विचार व्यक्त कीजिए-

• उसे दूसरी कठपुतलियों की ज़िम्मेदारी महसूस होने लगी।
• उसे शीघ्र स्वतंत्र होने की चिंता होने लगी।
• वह स्वतंत्रता की इच्छा को साकार करने और स्वतंत्रता को हमेशा बनाए रखने के उपाय सोचने लगी।
•वह डर गई, क्योंकि उसकी उम्र कम थी।

उत्तर - कविता में धागे से बंधी हुई कठपुतलियाँ पराधीन है। इन्हें दूसरों के इशारों पर नाचने से दु:ख होता है। परतंत्रता के दु:ख से बाहर निकलने के लिए एक कठपुतली विद्रोह कर देती है।वह स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है। सभी कठपुतलियाँ उसकी स्वतंत्र होने की इच्छा पर सहमती जताती है। लेकिन ,जब पहली कठपुतली पर सबकी स्वतंत्रता की जिम्मेदारी आती है ,तो वह सोच समझकर ही कदम उठाना जरुरी समझती है।

अभ्यास - कार्य

1) कई बार जब दो शब्द आपस में जुड़ते हैं तो उनके मूल रूप में परिवर्तन हो जाता है। कठपुतली शब्द में भी इस प्रकार का सामान्य परिवर्तन हुआ है। जब काठ और पुतली दो शब्द एक साथ हुए कठपुतली शब्द बन गया और इससे बोलने में सरलता आ गई। इस प्रकार के कुछ शब्द बनाइए-
जैसे-काठ (कठ) से बना-कठगुलाब, कठफोड़ा

(हाथ-हथ ,. सोना-सोन ,. मिट्टी-मट)

उत्तर

(i) हाथ – हथ से बना हथकड़ी।
(ii) सोना – सोन से बना सोनपापड़ी, सोनहलवा।
(iii) मिट्टी – मट से बना मटका।

2) कविता की भाषा में लय या तालमेल बनाने के लिए प्रचलित शब्दों और वाक्यों में बदलाव होता है।
जैसे-आगे-पीछे अधिक प्रचलित शब्दों की जोड़ी है, लेकिन कविता में 'पीछे-आगे' का प्रयोग हुआ है। यहाँ 'आगे' का '...बोली ये धागे' से ध्वनि का तालमेल है। इस प्रकार के शब्दों की जोड़ियों में आप भी परिवर्तन कीजिए-दुबला-पतला, इधर-उधर, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, गोरा-काला, लाल-पीला आदि।

उत्तर

(i)दुबला – पतला–पतला – दुबला।(ii)इधर – उधर–उधर – इधर।(iii)ऊपर – नीचे–नीचे – ऊपर।(iv)दाँए – बाँए–बाँए – दाँए।(v)गोरा – काला–काला – गोरा।(vi)लाल – पीला–पीला – लाल।